www.sarkarijournal.com

UPPSC GIC Lecturer Sanskrit Syllabus

वैदिक साहित्य ऋग्वेद – अग्नि सूक्त (1.1.1), विश्वेदेवा सूक्त (1.89), विष्णु सूक्त (1.154), प्रजापति सूक्त (10.121)। यजुर्वेद – शिव संकल्प सूक्त (34.1–6)। कठोपनिषद् – प्रथम अध्याय (1–3 वल्ली) ईशावास्योपनिषद – (सम्पूर्ण) वैदिक वाङ्मय का संक्षिप्त इतिहास (काल निर्धारण, प्रतिपाद्य विषय) वेदांग का संक्षिप्त परिचय (शिक्षा, निरुक्त, छन्द) दार्शनिक चिन्तन सांख्य दर्शन – सृष्टि प्रक्रिया, प्रमाण, सत्कार्यवाद, त्रिगुण का स्वरूप, पुरुष का स्वरूप (ग्रन्थ– सांख्यकारिका) वेदान्त दर्शन – अनुबन्ध चतुष्टय, साधन चतुष्टय, माया का स्वरूप, ब्रह्म का स्वरूप (ग्रन्थ– वेदान्तसार) न्याय/वैशेषिक दर्शन – प्रमाण (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द) (गन्थ– तर्कभाषा, तर्कसंग्रह) गीता दर्शन – निष्काम कर्म योग, स्थितप्रज्ञ का स्वरूप (गीता : द्वितीय अध्याय) जैन दर्शन एवं बौद्ध दर्शन का सामान्य परिचय (ग्रन्थ– भारतीय दर्शन –बलदेव उपाध्याय) व्याकरण 1. लघुसिद्धान्त कौमुदी – संज्ञा प्रकरण, सन्धि प्रकरण, कृदन्त प्रकरण, तद्धित प्रकरण, स्त्री, प्रत्यय, समास। 2. सिद्धान्तकौमुदी – कारक प्रकरण। 3. वाच्य परिवर्तन (कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य)। 4. शब्द रूप (परस्मैपदी, आत्मनेपदी) – भू, एध, अद्, हु, दा, दिव्, सु, तुद्, रुध्, तन्, की, चुर्। भाषा विज्ञान 1. भाषा की उत्पत्ति और परिभाषा 2. भाषाओं का वर्गीकरण 3. ध्वनि परिवर्तन, अर्थ परिवर्तन साहित्य शास्त्र काव्य प्रकाश/साहित्य दर्पण– काव्य प्रयोजन, काव्य लक्षण, काव्यहेतु, काव्यभेद। शब्द–शक्ति (अभिधा, लक्षणा, व्यंजना)। रस का स्वरूप, रस भेद, विभाव–अनुभाव–सुचारी भाव, स्थायी भाव, भाव का स्वरूप। गुण का स्वरूप एवं भेद। रीति का स्वरूप एवं भेद। अधोलिखित अलंकार का सामान्य परिचय–शब्दालंकार– अनुप्रास, यमक, श्लेष। अर्थालंकार– उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा अतिशयोक्ति, अर्थान्तरन्यास। दशरूपक– नाट्य लक्षण, नाट्य भेद, अर्थप्रकृति, अवस्था, सन्धि, नायक का स्वरूप एवं भेद। पारिभाषिक शब्द– नान्दी, प्रस्तावना, सूत्रधार, कंचुकी, प्रवेशक, विष्कम्भक, प्रकाश, आकाशभाषित, जनान्तिक, अपवारित, स्वगत, भरतवाक्य। ध्वन्यालोक (प्रथम उद्योत) – ध्वनि का स्वरूप।

लौकिक साहित्य रामायण एवं महाभारतः काल निर्धारण, उपजीव्यता, महत्व। प्रमुख काव्य– किरातार्जुनीयप(प्रथम सर्ग), शिशुपालवधा(प्रथम सर्ग), नैषधीयचरिता (प्रथम सर्ग), रघुवंशम् (द्वितीय सर्ग), कुमार सम्भव (प्रथम सर्ग)। प्रमुख खण्ड काव्य– मेघदूतम् नीतिशतक। प्रमुख गद्य काव्य– कादम्बरी (कथामुख), शिवराजविजयम्(प्रथम निःश्वास)। कथा साहित्य– पंचतंत्र, हितोपदेशः। नाटक– अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1–4 अंक), उत्तररामचरिम् (1–3 अंक), मृच्छकटिकम् (प्रथम

Sarkari Journal

अंक), रत्नावली, प्रतिमा नाटकम् चम्पू काव्य– नलचम्पू (आर्यावर्त वर्णन)। महाकाव्य, खण्डकाव्य, गद्यकाव्य, चम्पू काव्य एवं नाट्य–काव्य की उत्पत्ति एवं विकास।

Sarkari Journal